बस्तर की महिलाओं ने बताए पानी व हरियाली बचाने के तरीके

नईदुनिया प्रतिनिधि, रायपुर : देश के ग्रामीण विकास पर केंद्रित इंडिया रूरल कोलोक्वी 2025 के पांचवें संस्करण में इस बार बस्तर की महिलाओं ने अपने अनुभव साझा किए। ट्रांसफार्म रूरल इंडिया (टीआरआइ) द्वारा आयोजित इस आठ दिवसीय विचार मंथन में बस्तर से आई महिलाओं ने बताया कि कैसे उन्होंने जल संरक्षण के लिए अपने गांवों में घर-घर सोखता गड्ढा बनवाया है।

आइआइएम में आयोजित पैनल चर्चा में बस्तर की महिलाओं ने कहा कि जल संकट के स्थायी समाधान के लिए उन्होंने बोरिंग के पास 10 फीट गहरे गड्ढे खुदवाकर उसमें रेत और गिट्टी डलवाई, जिससे वर्षा जल सीधे धरती में समाकर भूजल स्तर को बढ़ाता है। इस नवाचार से न केवल बोरिंग का जलस्तर गिरना रुका है, बल्कि आसपास के कुंआ और तालाबों में भी जलभराव बना रहता है।

गांव-गांव में बांटे जाएं बीज : चर्चा के दौरान एक महिला ने वन विभाग से आग्रह किया कि गांव-गांव में बीज वितरण की व्यवस्था की जाए, जिससे ग्रामीणों को पौधारोपण के लिए प्रेरित किया जा सके।

उन्होंने कहा कि यदि हर परिवार साल में कम से कम पांच पौधे लगाएं और उनका संरक्षण करें, तो गांवों में हरियाली के साथ जलवायु परिवर्तन की समस्या पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है।

आइआइएम में आयोजित कार्यक्रम में ग्रामीण विकास के विषय पर परिचर्चा में शामिल अतिथि। ● नईदुनिया

सोमवार को आइआइएम में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद लोग ● नईदुनिया

स्कूलों में हो पुस्तकालय की स्थापना

एक अन्य ग्रामीण प्रतिभागी ने गांवों में शिक्षा व्यवस्था की कमजोरियों पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए योग्य शिक्षकों की नियुक्ति और बच्चों के लिए प्रेरक शैक्षणिक माहौल की आवश्यकता है। गांवों में उच्च माध्यमिक विद्यालय और पुस्तकालयों की स्थापना होनी चाहिए ताकि बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए शहरों की ओर न जाना पड़े।

गांवों में पीएचसी की संख्या बढ़ाई जाए

चर्चा में स्वास्थ्य सुविधाओं का मुद्दा भी प्रमुखता से उठा। बस्तर की महिलाओं ने कहा कि गांवों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या बढ़ाई जाए और वहां नियमित रूप से चिकित्सक, दवाइयां और जांच की सुविधा उपलब्ध हो। उन्होंने बताया कि वर्तमान में बीमारियों के इलाज के लिए ग्रामीणों को शहरों में भटकना पड़ता है, जिससे आर्थिक और मानसिक दोनों ही प्रकार की परेशानी होती है।

कृषि विशेषज्ञों की नियुक्ति की जाए

एक किसान ने खेती में रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग पर चिंता जताते हुए जैविक खेती की ओर लौटने की जरूरत बताई और कहा कि गांवों में कृषि विशेषज्ञों की नियुक्ति होनी चाहिए, जो किसानों को यह मार्गदर्शन दे सकें कि खेत की मिट्टी की उर्वरता के अनुसार किस प्रकार और कितनी मात्रा में खाद और जैविक सामग्री का उपयोग करना चाहिए। इससे फसल की गुणवत्ता भी बढ़ेगी और किसानों की आय में भी सुधार होगा।